एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 09 (सितम्बर, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए डिजिटल पहल

*डॉ. अंजना राय
सहायक प्राध्यापक, प्रसार शिक्षा एवं संचार प्रबंधन विभाग, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: anjanarai192@gmail.com

लिंग समानता और सतत विकास महिलाओं की डिजिटल सशक्तिकरण पर निर्भर करता है। प्रौद्योगिकी उपलब्धता में लिंग अंतर को खत्म करने और महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए, भारतीय सरकार ने कई डिजिटल परियोजना आरंभ की हैं। भारत सरकार के डिजिटल साक्षरता प्रयास महिलाओं को एक सतत भविष्य प्रदान करने, सामाजिक-आर्थिक समावेश को बढ़ावा देने और डिजिटल तकनीक तक पहुंच में लिंग अंतर को कम करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह लेख भारत में महिलाओं के लिए समकालीन डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों के परिदृश्य का विस्तृत अध्ययन करता है। इसका उद्देश्य उनकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना, बाधाओं की पहचान करना और डिजिटल साक्षरता के परिणामों को सुधारने के लिए व्यावहारिक समाधान की खोज करना है। लेख सरकारी वेबसाइटों और विश्वसनीय स्रोतों, जिसमें रिपोर्ट और प्रकाशन शामिल हैं, से द्वितीयक डेटा का विस्तृत मूल्यांकन करता है। इस लेख का लक्ष्य इन मुद्दों को उजागर करना और भारत में डिजिटल लिंग अंतर की जटिल प्रकृति पर अंतर्दृष्टि प्रदान करना है। अध्ययन संभावित दृष्टिकोणों और बाधाओं को दूर करने के उपायों की भी जांच करता है और उसे बढ़ाता है।महिलाओं की डिजिटल साक्षरता, डिजिटल समावेशन और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए, ये समाधान सामुदायिक-आधारित रणनीतियों, मोबाइल प्रौद्योगिकियों के एकीकरण, कस्टम प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों और केंद्रित जागरूकता अभियानों को शामिल करते हैं।

इस पत्र का उद्देश्य नीति निर्माताओं, प्रथाओं और हितधारकों को उन डिजिटल परियोजनाओं के बारे में सूचित करना है जो महिलाओं को सशक्त बनाते हैं और एक सतत भविष्य को बढ़ावा देते हैं। यह उपलब्ध डेटा का पूरी तरह से विश्लेषण करता है और प्रमुख बाधाओं और अवसरों की पहचान करता है। डिजिटल लिंग अंतर को पाटने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए, लेख में महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के लिए डिजिटल साक्षरता के महत्व को उजागर किया गया है।

डिजिटल परिवर्तन के युग में, समाजों का कार्यप्रणाली, संचार और जानकारी तक पहुँच में गहन परिवर्तन आए हैं। लिंग समानता और सामाजिक-आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देने में डिजिटल तकनीकों की महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता देते हुए, भारतीय सरकार ने महिलाओं को सशक्त बनाने और उनकी डिजिटल साक्षरता को बढ़ाने के लिए विभिन्न परियोजनाएँ शुरू की हैं। हालांकि, महिलाओं को डिजिटल संसाधनों तक पहुँच और उपयोग में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे उनके डिजिटल समाज और अर्थव्यवस्था में पूर्ण भागीदारी में बाधा आती है। यह अध्ययन भारत में महिलाओं के लिए डिजिटल कार्यक्रमों के वर्तमान परिदृश्य की जांच करता है, उनकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है, महिलाओं की संलग्नता और पहुँच में बाधक चुनौतियों की पहचान करता है, और एक स्थायी भविष्य के लिए डिजिटल सशक्तीकरण को बढ़ाने की रणनीतियाँ प्रस्तावित करता है (राठी, एस.2015)। डिजिटल साक्षरता सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए अपरिहार्य बन गई है, जिससे व्यक्तियों को संवाद करने, ज्ञान प्राप्त करने और आधुनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में भाग लेने में सक्षम बनाता है। भारत सहित दुनियाभर की सरकारें, महिलाओं और हाशिए पर पड़े समूहों को डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देकर सक्षम बनाने के लिए पहल की गई.

महिलाओं का सशक्तिकरण

"सशक्तिकरण " का मतलब है कि लोग—महिलाएँ और पुरुष—अपनी ज़िंदगी पर नियंत्रण रख सकते हैं: अपनी प्राथमिकताएँ तय कर सकते हैं, कौशल प्राप्त कर सकते हैं (या उनके कौशल और ज्ञान को मान्यता मिल सकती है), आत्म-विश्वास बढ़ा सकते हैं, समस्याओं को हल कर सकते हैं, और आत्मनिर्भरता विकसित कर सकते हैं। (यूएन विमेन, महिलाओं के सशक्तिकरण के

सिद्धांत, 2011)महिलाओं का सशक्तिकरण सतत विकास के लिए आवश्यक है और यह एक मानव अधिकार का मुद्दा है। दुनिया के कई हिस्सों में, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, रोजगार, और राजनीतिक प्रतिनिधित्व तक पहुँच में अब भी लैंगिक असमानता मौजूद है। संयुक्त राष्ट्र ने सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को निर्धारित किया है, जो महिलाओं के सशक्तिकरण पर निर्भर करते हैं क्योंकि ये आर्थिक विकास, सामाजिक उन्नति, और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण हैं। यह निबंध महिलाओं के सशक्तिकरण और एक सतत भविष्य के बीच के संबंध की जांच करता है, प्रगति में बाधाओं और लैंगिक समानता के कई फायदे पर जोर देता है।

महिलाओं का सशक्तिकरण: सतत विकास के लिए एक उत्प्रेरक

1. **पर्यावरणीय स्थिरता:** कृषि, संरक्षण और संसाधन प्रबंधन के क्षेत्रों में, महिलाएँ अत्यावश्यक हैं। महिलाओं को संसाधन, ज्ञान और प्रशिक्षण प्रदान करना उनकी क्षमता को बढ़ाता है ताकि वे पर्यावरणीय समस्याओं का सामना कर सकें और सतत प्रथाओं को बढ़ावा दे सकें।

2. **जलवायु परिवर्तन का अनुकूलन और ह्रास:** जलवायु परिवर्तन का प्रभाव महिलाओं पर असमान रूप से पड़ता है क्योंकि वे आमतौर पर अविकसित देशों में महत्वपूर्ण देखभालकर्ता और संसाधन प्रबंधक होती हैं। जब नीतियां और गतिविधियाँ लिंग-संवेदनशील होती हैं, तो महिलाएं जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूलन और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने में बेहतर तरीके से सक्षम हो जाती हैं।

3. स्वास्थ्य और कल्याण: सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज को प्राप्त करने और माताओं और बच्चों के स्वास्थ्य को सुधारने के प्रयास, स्वास्थ्य सेवा परिणामों और पहुंच में लिंग अंतर के कारण बाधित होते हैं। महिलाओं के स्वास्थ्य में निवे

सामाजिक सशक्तीकरण के लिए डिजिटल साक्षरता

• महिलाओं से संबंधित विभिन्न समस्याओं, विषयों और प्रयासों पर ताजा और व्यावहारिक ज्ञान, डेटा और जागरूकता प्राप्त करना। इस नए ज्ञान और समझ ने अक्सर उनके विचारों को उत्तेजित और विस्तारित किया।

• ऐसे विभिन्न गतिविधियों में भाग लेना जहाँ आप उन विषयों पर विचार कर सकें जो आपको प्रभावित करते हैं, मुद्दों पर खुलकर चर्चा कर सकें, और अन्य महिलाओं और शक्तिशाली पदों पर बैठे लोगों के साथ चिंताओं और अनुभवों को साझा कर सकें।

• सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ाना।श, विशेष रूप से उनके यौन और प्रजनन अधिकारों में, सतत विकास में सहायता करता है।

1. डिजिटल साक्षरता और राजनीतिक सशक्तिकरण

• अपने अधिकारों की रक्षा के लिए बोलने में सक्षम होना।

• निर्णय लेने की क्षमता की कमी।

• विभिन्न क्रियाओं का आयोजन करना और महिलाओं और महिला समुदायों पर प्रभाव डालने वाले मुद्दों पर चर्चा करना, नेटवर्किंग या उद्योग, सरकार और अन्य महिला समूहों के व्यक्तियों के साथ बैठकों के माध्यम से।

• बेहतर शासन

2. डिजिटल साक्षरता और मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण

• आत्म-गौरव और आत्मविश्वास में सुधार।
• अधिक सम्मान और मूल्य का अनुभव करना।
• नए कौशल और जानकारी प्राप्त करने में अधिक प्रखर उत्साह, प्रेरणा, उत्सुकता और जिज्ञासा।
• दूसरों, खासकर अन्य मजबूत महिलाओं से कम अलगाव का अनुभव करना; इसके परिणामस्वरूप, अधिक खुश, अधिक संतोषित और जीवन की अधिक सराहना करना।

3. डिजिटल साक्षरता और शैक्षिक सशक्तिकरण

• उन्हें ऐसे भाषा और प्रारूप में विश्व ज्ञान तक डिजिटल पहुंच प्रदान करें जिससे वे परिचित हैं।
• प्रत्येक क्षेत्र में व्यापक ज्ञान और नए विचारों की समझ।
• डिजिटल साक्षरता महिलाओं के लिए वयस्क और गैर-औपचारिक शिक्षा का समर्थन करती है।
• स्थानीय ज्ञान।

4. डिजिटल साक्षरता और आर्थिक अधिकारिता

• यह उनके लिए मासिक वेतन वृद्धि को संभव बनाता है।
• डिजिटल साक्षरता के माध्यम से प्रमुख उद्योगों के साथ नौकरियों और विलय के अवसर संभव होते हैं।
• डिजिटल शिक्षा महिलाओं को वित्तीय स्थिरता देती है और महिलाओं के सभी अन्य अधिकारिता के रूपों के लिए आधार है।
• डिजिटल साक्षरता और श्रम बाजार तक व्यापक पहुंच के माध्यम से महिलाओं की उद्यमिता में वृद्धि।
• गांव घरों की औसत आय में वृद्धि।

भारत सरकार ने इन खामियों को पाटने और महिलाओं को डिजिटल क्षेत्र में प्रभावी ढंग से नेविगेट करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करके सशक्त बनाने के लिए विभिन्न डिजिटल साक्षरता परियोजनाएँ शुरू की हैं। हालाँकि, अपर्याप्त अवसंरचना, सांस्कृतिक मानदंड और ज्ञान की कमी जैसी बाधाएँ इन पहलों में महिलाओं की भागीदारी को बाधित करती हैं, जिससे उनकी सामाजिक-आर्थिक उन्नति के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाने की क्षमता सीमित हो जाती है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए लक्ष्यित क्षमता निर्माण प्रयासों, समुदाय की भागीदारी और नीति हस्तक्षेपों को शामिल करते हुए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है।(गणेशन, एम. के., & वेथीराजन, सी. 2020).

भारत सरकार ने महिलाओं के लिए विभिन्न डिजिटल साक्षरता पहलों को शुरू किया है। ये हैं:

अनुक्रमांक संख्या	सरकारी योजनाएँ	मुख्य उद्देश्य
1.	प्रधान मंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता (पीएमजीडीएस)	ग्रामीण महिलाओं को डिजिटल कौशल से सशक्त बनाना और डिजिटल विभाजन को पाटना।
2.	राष्ट्रीय डिजिटल साक्षरता मिशन	आवश्यक डिजिटल कौशल प्रदान करना, शिक्षा और रोजगार के अवसरों की पहुंच को बढ़ाना, और डिजिटल पहुंच में लिंग समानता को बढ़ावा देना।
3.	डिजी लैंप	छात्रों में डिजिटल साक्षरता को बढ़ाना, ऑनलाइन सुरक्षा को बढ़ावा देना, और उन्हें आवश्यक कंप्यूटर कौशल से लैस करना।
4.	स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के लिए डिजिटल वित्तीय साक्षरता सत्र	महिलाओं को डिजिटल और वित्तीय साक्षरता से सशक्त करना, सूचित निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करना, और नेतृत्व को बढ़ावा देना।
5.	लड़कियों की शिक्षा के लिए अंग्रेजी और डिजिटल	किशोरियों के जीवन के अवसरों में सुधार करना अंग्रेजी ज्ञान, डिजिटल कौशल, और सूचित निर्णय लेने के माध्यम से।
6.	सामुदायिक सूचना संसाधन केंद्र	देश भर में डिजिटल साक्षरता और विकास सेवाओं के लिए समुदाय-उन्मुख केंद्र स्थापित करना।
7.	डिजिटल साक्षरता अभियान	ग्रामीण महिलाओं को डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण प्रदान करना, ताकि वे डिजिटल अर्थव्यवस्था में भाग ले सकें।
8.	डिजिटल ALL	प्रौद्योगिकी और डिजिटल नवाचार पहलों के माध्यम से लिंग समानता को बढ़ावा देना।
9.	ई-महिला	ग्रामीण महिलाओं को विभिन्न उद्देश्यों और सशक्तिकरण के लिए इंटरनेट तक पहुँचने और उसका उपयोग करने के लिए सिखाना।

महिलाओं के सशक्तिकरण में बाधाएं और चुनौतियां

भारतीय संदर्भ में, महिलाओं को डिजिटल क्रांति का लाभ नहीं मिला है, मुख्य रूप से सामाजिक संरचनाओं, मूल्यों और विश्वासों के कारण। इस परिवर्तन के लाभ अब तक ग्रामीण भारत तक नहीं पहुँचे हैं; शहरी भारत इसका आनंद ले रहा है। हमारी महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए डिजिटल जानकारी का उपयोग करने के प्रयासों के बावजूद, अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है। महिलाओं और लड़कियों को डिजिटल साक्षरता का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना कई कठिनाइयों से भरा है। ये निम्नलिखित रूप से चर्चा की जाती हैं: गरीबी: भारत में गरीबी, जो जनसंख्या के 37% को प्रभावित करती है, महिलाओं में डिजिटल साक्षरता के सशक्तीकरण के लिए एक बाधा है क्योंकि कई इसे एक विलासिता के रूप में देखते हैं, प्रौद्योगिकी तक पहुँच की बजाय मौलिक आवश्यकताओं को प्राथमिकता देते हैं।

1. **साक्षरता:** भारत में, साक्षरता की चुनौतियां विशेष रूप से महिलाओं के लिए बनी हुई हैं, क्योंकि 7 साल से ऊपर की केवल 45% महिलाएं साक्षर हैं और उच्च अनुपात के कारण शिक्षा के प्राथमिक स्तरों से आगे जाने की पहुंच सीमित है, जो भाषा की बाधाओं और प्रणालीगत समस्याओं से और भी बिगड़ जाती है, जबकि सरकार की मुफ्त शिक्षा की पहलों के बावजूद।
2. **कंप्यूटर साक्षरता:** भारत में कंप्यूटर साक्षरता में असमानताएं हैं, शहरी छात्रों को प्राथमिक शिक्षा तक बेहतर पहुंच होती है जबकि ग्रामीण छात्र सीमित सरकारी समर्थन पर निर्भर हैं, जो affordability समस्याओं और भाषा की बाधाओं द्वारा बाधित है, विशेष रूप से जब अधिकांश संसाधन अंग्रेजी में हैं, जो इंटरनेट की व्यापक पहुंच और शिक्षा को रोकता है।
3. **सामाजिक- सांस्कृतिक पहलू:** भारत में सामाजिक- सांस्कृतिक मानदंड लिंग असमानताओं को बढ़ावा देते हैं, शिक्षा और डिजिटल प्रौद्योगिकी की पहुंच में लड़कों को लड़कियों पर प्राथमिकता देते हैं, महिलाओं को अक्सर घरेलू भूमिकाओं तक सीमित कर देते हैं, जिससे उनकी प्रौद्योगिकी और सशक्तिकरण के अवसरों के प्रति एक्सपोजर कम हो जाता है।
4. **पूर्व विवाह:** भारत में पूर्व विवाह, जो 50% से अधिक किशोरीयों को प्रभावित करते हैं, उच्च ड्रॉपआउट दरों और सीमित शैक्षिक अवसरों में योगदान देते हैं, जिससे लिंग असमानताएँ बनी रहती हैं और व्यक्तिगत विकास के बजाय पारिवारिक जिम्मेदारियाँ प्राथमिक बन जाती हैं, जिससे टेलीविजन जानकारी और मनोरंजन का मुख्य स्रोत बन जाता है।
5. **स्वामित्व:** गरीबी और लिंग-आधारित सामाजिक परंपराओं के कारण, ग्रामीण भारत में महिलाएं अक्सर संचार उपकरण जैसे रेडियो, मोबाइल फोन और लैपटॉप नहीं रखतीं। पुरुषों और लड़कों को अक्सर प्राथमिकता दी जाती है, जो शहरी क्षेत्रों में मुख्य रूप से देखी जाने वाली प्रौद्योगिकी पहुंच में असमानताओं को उजागर करता है। (बिमल 2012)।

निष्कर्ष

अवसंरचनात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक, और भाषाई बाधाएं जो महिलाओं को डिजिटल साक्षरता प्राप्त करने से रोकती हैं, उन्हें क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समन्वित पहलों के जरिए संबोधित किया जाना चाहिए ताकि प्रौद्योगिकी में लैंगिक असमानता को समाप्त किया जा सके। डिजिटल प्रयासों का उपयोग करके, हम महिलाओं को समग्र विकास, जानकारी, और संसाधनों के लिए अवसर प्रदान कर सकते हैं, जो उनके जीवन के सभी क्षेत्रों में उनके स्वतंत्रता और ताकत को बढ़ावा देगा। सूचना प्रौद्योगिकी महिलाओं को सशक्त बनाती है। उनकी स्थिति पूर्व की तुलना में बदल गई है। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने महिलाओं को समाज के सभी पहलुओं में भाग लेने के लिए सक्षम बनाया है। इसने महिलाओं को अधिक आय, ज्ञान, और कौशल दिए हैं, जो उन्हें सशक्त बनाता है। अब अधिक महिलाएं लचीले कार्यक्रमों और इंटरनेट पहुंच के कारण घर से काम कर सकती हैं। इस प्रकार, महिलाओं के सशक्तिकरण को डिजिटल साक्षरता से महत्वपूर्ण लाभ मिला है।